KELUNG BOOKS

मांजार

सुषमा असुर



मांजार

सुषमा असुर

KELUNG BOOKS

प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन
आदिवासी एवं देशज भाषाओं में उत्कृष्ट प्रकाशन के 24 वर्ष

केलुङ बुक्स प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन की छाप है.

मूल्य : ₹250

पहला संस्करण: अप्रैल 2026

प्रकाशक:
प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन
चेशायर होम रोड, बरियातु, रांची -834009 (झारखण्ड)
फोन: 9262975571 / 0651-2201261
ई-मेल: pkfbooks@gmail.com
वेब पता: www.kelungbooks.in | www.jharkhandiakhra.in

आवरण चित्र सौजन्यः मोहन नाईक
आवरण सज्जा: आधार अल्टरनेटिव मीडिया (आम), रांची (झारखण्ड)
मुद्रक: मणिपाल ग्लोबल प्रिंट सॉल्यूशंस, पीओडी-नोएडा, उत्तर प्रदेश-201305

ISBN : 978-81-997270-8-3

Manjaar (Companion) – Hindi poems by Sushma Asur.

कतार

सदियों बाद एक असुर (स्त्री) का लिखित कथन 6
1. जीवन का घाव 15
2. हमारी सुगंध 19
3. हम तलाशते हैं..21
4. मैं तुम्हें देख रही हूँ......................................23
5. माँ, तुम्हें जोहार...24
6. दीदी 26
7. साही पक्षी...28
8. जाने वाले 30
9. हमारा सहारा 32
10. क्या देख रहे हो? 34
11. कौन करेगा तुम्हारा काम 36
12. तुम तो चले जाओगे....................................38
13. असुरों के संगी-साथी 40
14. ऊँगली हमारा खोज रही है 42
15. हमें सुगंध पसंद है......................................43
16. साँस लेने के लिए 44
17. हम आना चाहते हैं.....................................45
18. कोही बेसरा...47
19. सोने जैसा जीवन.......................................48
20. सुरगुजा के फूल 49
21. हमारा परिवार 50
22. पहाड़ों की घेरे में मेरा गाँव 54
23. मेरी पहचान...55
24. तड़पती धरती...57
25. मांजार* 58
26. आओ हमारे पास 60
27. कोरी से आगे 62

28. महुआ 64
29. महुआ–कुसुम का प्रेम 66
30. हम असुर हैं, सुर नहीं...............................69
31. तड़पती हुई महिला.......................................71
32. हमारे गीत...72
33. हमारा ज्ञान..73
34. खान–पान..75
35. खजुर की चटाई..77
36. समय आ गई है 79
37. हमें लूटने वाले..81
38. जहाँ जाते हैं, वहाँ रोकते हैं..........................83
39. हमारे बच्चे 84
40. हम गाते हैं 85
41. हमारा नाच..86
42. गा रही हैं महिलाएँ 87
43. राज्य घूम गए 88
44. हम रहते हैं सूरज के साथ 89
45. हम जो सिंगार करते हैं...............................91
46. किसका पाला हुआ मैना, किसका सुग्गा 93
47. कौन शहर की पालटाइनया 94
48. किसके पास जा रहे हैं 95
49. आते-जाते..96
50. एक रास्ता...97
51. आवाज़ दे रही हैं 99
52. मुझे याद है..101
53. घायल चिड़िया 105
54. असुरों के घर..107
55. बच्चे तो नहीं जान रहे हैं 109
56. सुनो आदिवासियों 110

57. जोड़ा भाई 112
58. हमारा सिंगार 113
59. हम किसी से नहीं सीखते हैं........................ 115
60. हम तो बुला रहे हैं, गीत गाते........................ 118
61. छोटा पौधा, बड़ा पेड़ 120
62. तुम्हारा सुगंध 122
63. चलो बेटी 123
64. जहाँ जाओगी, वहीं जाएँगे..........................125
65. सब कुछ छोड़ जा रहे हैं............................126
66. समय आएगा..127
67. हमारा आँगन 128
68. हम नहीं जानते थे....................................130
69. भाषा लिखने के लिए 134
70. लिख–लिख कर फाड़ते ही जाते थे................136
71. हम जिद्दी थे..139
72. हम, घायल होकर उठ रहे हैं........................ 144
73. हम तुम्हारे लिए हैं.................................... 146
74. तुम्हें 'जोहार'.. 149
75. टाना भगत इंटर महाविद्यालय, घाघरा............150
76. मेरी ओर देखो 156
77. पहाड़ रो रहा है 157
78. नहीं तो घास भर जाएगा 158
79. चलो 'दंवरी खेदने' 160
80. कितने दिन? 161
81. किस समय की नींद में...............................162
82. हम ज़रूर जिएंगे निडर, पठार की तरह 163
83. संगी खो गई रस-गंध की तरह......................165
84. पहाड़-पहाड़ के रास्ते 166
85.जोहार 167

Link for Book

https://kelungbooks.in/product/manjaar-sushma-asur-poetry-collection/

https://www.amazon.in/dp/B0H1P7RJBT



सुषमा असुर का जन्म 5 जुलाई, 1983 को झारखंड राज्य के गुमला जिला स्थित नेतरहाट के सखुआपानी गाँव में एक 'असुर' आदिवासी परिवार में हुआ। उनकी माता का नाम बुधनी असुर तथा पिता का नाम खंभीला असुर है। उनके पिता, स्मृतिशेष खंभीला असुर, अपने समुदाय के अग्रणी व्यक्तित्वों में से थे और असुर क्षेत्र में एक समर्पित समाज सुधारक के रूप में प्रतिष्ठित थे। उनके असामयिक निधन के बाद सुषमा के परिवार को सामाजिक और आर्थिक दोनों ही स्तरों पर गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

इन कठिन परिस्थितियों के बावजूद सुषमा असुर ने धैर्य और साहस का परिचय देते हुए अपनी शिक्षा जारी रखी। संघर्षपूर्ण जीवन अनुभवों ने उनके व्यक्तित्व को दृढ़ बनाया और उन्हें अपनी मातृभाषा में लेखन के लिए प्रेरित किया।

लेखन की दिशा में उन्हें झारखंडी भाषा, साहित्य और संस्कृति से जुड़ी संस्था 'अखड़ा' के साथियों का विशेष प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। इस संस्था से जुड़ाव ने उन्हें अपनी भाषा और संस्कृति के संरक्षण के प्रति सजग किया तथा अपने समुदाय के लोगों में जागरूकता लाने और रचनात्मक साहित्य सृजन की ओर अग्रसर किया।

सुषमा असुर जिस असुर समुदाय से आती हैं, वह सामाजिक और शैक्षणिक दृष्टि से झारखंड के अन्य आदिवासी समुदायों की तुलना में शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काफी पीछे रहा है। ऐसे में उनका साहित्यिक योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक है। वर्ष 2010 में प्रकाशित 'असुर सिरिंग' असुर भाषा में संकलित और संपादित की गई पहली पुस्तक है, जो इस समुदाय के साहित्यिक इतिहास में एक मील का पत्थर है। उनकी कुछ कविताएँ 'आदिम राग' (2013) और 'कवि मन जनी मन' काव्य-संग्रह में भी संकलित हैं। इनकी दो अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं-'असुर व्याकरण' और 'असुर गद्य-पद्य संग्रह'। ये दोनों 2021 में डॉ. रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, झारखंड सरकार द्वारा प्रकाशित की गई हैं।

सुषमा असुर का लेखन न केवल उनकी व्यक्तिगत संघर्षगाथा का प्रतिबिंब है, बल्कि यह असुर समुदाय की सांस्कृतिक अस्मिता, भाषा संरक्षण और सामाजिक जागरूकता की एक सशक्त अभिव्यक्ति भी है।

आवरण चित्र सौजन्यः मोहन नाईक

कविता

₹ 250

9 788199 727083

KELUNG BOOKS

www.kelungbooks.in
www.jharkhandiakhra.in
www.kharia.org